श्री रामनामार्थ

एक बार आप ज्ञान कूप पर बैठे हुए थे। संत सभा लगी हुई थी। सतसंग हो रहा था। उत्तरा खण्ड के एक महात्मा सब तीर्थों का पर्यटन करते हुए मिथिला जी आये और कोई सिद्ध और विख्यात महात्मा का परिचय पूछा। लोगों ने ज्ञान कूप पर सियाराम बाबा का परिचय दिया। महात्मा ज्ञान कूप पर पहुँच महाराज जी का रूप-विरति-तेज देख मुग्ध हो गये। दण्डवत प्रणाम कर बैठे। और किशोरीजी की कृपा का तथा हनुमान जी की सिद्धि का मन्त्र पूछा। महाराज श्री सतगुरू रामशरण जी द्वारा उत्तम रीति से साङ्गोपाङ्ग कहला दिये। यह मनोभिलषित मनोर्थ की सिद्धि पाकर महात्मा बहुत प्रसन्न हुए, और कहा, सचमुच आप इस समय में संसार के विख्यात महात्मा हैं, और सब वस्तु का भंडार आप के पास भरा है। मैं चारों धाम घूमा और सब जगह प्रश्न किया, परन्तु उचित उत्तर से वञ्चित रहा। अब आकर आप से शान्ति पाई। अब आशा है कि शेष शङ्काओं का भी समाधान हो जायगा।

प्रश्नः—अच्छा सरकार! अब आप श्री 'राम' नाम का भावार्थ, तात्पर्यार्थ, रूपार्थ, गुणार्थ, प्रताप व प्रभावात्मक अर्थ साङ्गोपाङ्ग व्याख्या पूर्वक कीजिये? श्री महाराज बोलेः—

बहुत सुन्दर प्रश्न किया—अच्छा सावधान होकर मन, बुद्धि, चित लगा कर सुनिये:—

उत्तर— वन्दौ सतगुरु पद कमल, नवल अमल मन होय।
नाम अर्थ जेहि उर फुरै, प्रेमलता कह सोय॥१॥
राम नाम कर अर्थ अति, सुन्दर विशद विशाल।
शेष महेश न कहि सकहिं, प्रेमलता मति बाल॥२॥
नाम रूप गुण धाम शुचि, चारिउ यदपि समान।
नाम तदपि कारण समुझि, बरणैं प्रेमलतान॥३॥
प्रथम अर्थ श्री नाम कर, लिखौं यथामति जोय।
नाम प्रताप प्रभाव जग, प्रेमलता नहिं गोय॥४॥
निज मन सम्बोधन हित, वर्णत वर्ण सु अर्थ।
प्रेमलता मति बाल लखि, छमिहहिं सुजन समर्थ॥५॥

राम नाम युग आखर, सकल विश्व अभिराम ।
प्रेमलता वन्दै सदा, आदि मध्य परिणाम ॥ ६ ॥
रेफ सुबिन्दु अवर्ण हुइ, चढ़े वर्ण के माथ ।
छत्र मुकुट सम शोभित, प्रेमलता के नाथ ॥ ७ ॥
उर्द्ध सुगति सूचित करैं, प्रेमलता जन हेत ।
जीव पीव कर रूप लखि, चलि सुजान साकेत ॥ ८ ॥
वर्ण सुशीसहिं रेफ चढ़ि, अर्द्ध उर्द्ध गति देइ ।
शिव विरँचि हरिपद लहैं, प्रेमलता जेहि सेइ ॥ ९ ॥
रेफ सुरेश परेश प्रभु, सीताराम स्वरूप ।
परम तेज कहि जाय किमि, प्रेम सु लता अनूप ॥ १० ॥
अनिर्वाच्य निर्वर्ण वर, अर्ध सुरेफ विराज ।
प्रेमलता जन जोग करि, ध्यावहिं त्यागि कुसाज ॥ ११ ॥
ब्रह्म निरावय रेफ लखि, इच्छा बिन्दु सुजान ।
अविनाशी सेवक सदा, जीव सु प्रेमलतान ॥ १२ ॥
मायिक भोग विलास लखि, भूल्यो नाम स्वरूप ।
प्रेमलतहि चेताय तब, धरि गुरु रूप अनूप ॥ १३ ॥
अर्ध रेफ वर वरण शिर, शोभित छत्राकार ।
प्रेमलता सठ ताहि भजि, सहित सु बिन्दु उदार ॥ १४ ॥
नाम रूप भलि भाँति कहि, सतगुरु दीन्ह लखाय ।
प्रेमलता हुलसाय हिय, पिय पद परसेउ जाय ॥ १५ ॥
शरणागत लखि जीव निज, रेफ लीन्ह उर लाय ।
प्रेमलता भ्रम भेद भव, मेटि परम सुख पाय ॥ १६ ॥
जीव स्वरूप अकार लघु, मिल्यो रेफ मधि आय ।
प्रेमलता तब "र" भयो, निज प्रिय जीवहिं पाय ॥ १७ ॥
दम्पति विमल विहार लखि, रेफ मध्य सो जीव ।
तत्सुख भोगत मुदित मन, सतगुरु कृपा अतीव ॥ १८ ॥
जीव सु ललित अकार लघु, रेफ मध्य परिचाइ ।
दीर्घ अकार स्वरूप धरि, पुनि प्रगटे गुरु आइ ॥ १९ ॥
दम्पति रूप सुरेफ मधि, जीव सु मधुराकार ।
आचारज पर रूप जो, राजत दीर्घ अकार ॥ २० ॥
दम्पति इच्छा बिन्दु जो, दिव्य रूप जग मूल ।
मधुर मकार स्वरूप सो, सर्व भाँति सुख मूल ॥ २१ ॥
मधुर रकार मकार के, मध्य अकार विराज ।
प्रेमलता त्रय वर्ण मिलि, राम नाम भल भ्राज ॥ २२ ॥
प्रथम रकार अकार पुनि, मधुर मकार निहारि ।
प्रेमलता रटि बैखरी, अर्थ अनूप विचारि ॥ १३ ॥

जीव सु मधुर अकार जो, भयो ब्रह्म लय लीन ।
संजय तजि त्रय वर्ग कर, अर्थ विचारु प्रवीन ॥२४॥
ओंकार जो वेद कर, प्राण कहत बुध लोग ।
प्रेमलता सो प्रणव ते, प्रगट्यो ओम अशोग ॥२५॥
प्रणव मध्य त्रय वर्ग बर, मधुर अकार उकार ।
ह्रश्व हलन्त मकार जो, प्रेमलता सुखसार ॥२६॥
राम नाम ते प्रणव सो, प्रगट भयो गुण धाम ।
प्रेमलता तजि संशय, भजु सियराम ललाम ॥२७॥
महा रमायण मध्य जो, शिव गिरिजा संवाद ।
प्रेमलता सुनि समुझि करि, मिटहिं कुतर्क विवाद ॥२८॥
तत्वमसी ते आदि जे, वेद वाक्य बर चारि ।
राम नाम के अंग सब, प्रेमसुलता निहारि ॥२९॥
सात क्रोर सुमंत्र वर, चित भ्रम कारक जानि ।
राम सुनाम परेश प्रभु, प्रेमलता मुद खानि ॥३०॥
सतपद ब्रह्म रकार लखु, चित पद जीव अकार ।
परमानन्द मकार जो, प्रेमलता सुख सार ॥३१॥
अमल निरक्षर ब्रह्म जो, मधुर रकार विचारि ।
अक्षर जीव अकार लखु, प्रेमलता उर धारि ॥३२॥
क्षर मकार संसार कर, कारण माया रूप ।
शिव बिरँचि कहँ मोहई, प्रेम सुलता अनूप ॥३३॥
तम गुण मधुर मकार जो, महा शम्भु कह वेद ।
रज गुण दीर्घ अकार में, बसहिं बिरँचि अखेद ॥३४॥
सतगुण रूप रकार हरि, परम तेज मय जोइ ।
प्रेमलता सियराम रटि, प्रकट प्रताप न गोइ ॥३५॥
त्रय गुण मय त्रय देवता, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
प्रेमलता प्रेरक प्रभु, राम सु नाम परेश ॥३६॥
विमल विराग सु तीव्रकर, कारण मधुर रकार ।
ज्ञान स्वरूप अकार लखि, भक्ति अनूप मकार ॥३७॥
अग्नि सुबीज रकार लघु, परम तेज दरशाय ।
कर्म शुभा शुभ सेइ जेहि, बिनु प्रयास जरि जाय ॥३८॥
दीर्घ अकार प्रकाश मय, भानु बीज जिय जानि ।
हरहि मोह अज्ञान तम, प्रेमलता भव भानि ॥३९॥
हिमकर रूप मकार लखु, अमृत मय करुपान ।
जन्म मरण त्रय ताप रुज, नाशहिं प्रेमलतान ॥४०॥
अवध स्वरूप रकार जो, ऐश्वर्य लीला खानि ।
कामद दीर्घ अकार सो, मिश्रित खेल प्रमानि ॥४१॥

मिथिला मधुर मकार लखि, दम्पति दूलह वेष ।
प्रेमलता माधुर्य मय, लीला कीन्ह रमेश ॥ ४२ ॥
ऐश्वर्य मिश्रित माधुरी, त्रय लीला त्रय धाम ।
प्रेमलता त्रय वर्ण मधि, लखि जापक अभिराम ॥ ४३ ॥
त्रय बिभूति मय सर्व जग, श्री, भू, लीला देवि ।
प्रेमलता त्रय वर्ण कर, रुख लखि सादर सेवि ॥ ४४ ॥
श्री सियराम स्वरूप जो, मधुर रकार अनूप ।
दीर्घ अकार सु जानि जिय, श्री रामायण रूप ॥ ४५ ॥
ललित मकार सुधाम लखि, मन परि पूरण काम ।
अर्थ अनूप विचारि जिय, प्रेमलता वशुयाम ॥ ४६ ॥
दैहिक ताप रकार हर, दैविक दीर्घ अकार ।
भौतिक ज्वर भक्षण करै, प्रेम सुलता मकार ॥ ४७ ॥
सँचित कर्म रकार हर, कृत प्रारब्ध अकार ।
क्रीयमान बहु जन्म कर, हरत अनूप मकार ॥ ४८ ॥
प्रवल मकार भविष्य कर, पाप ताप हरि लेइ ।
राम नाम त्रय काल महँ, प्रेमलता सुख देइ ॥ ४९ ॥
मही मकार अकार नभ, मधुर रकार पताल ।
जल, थल, नभ त्रय गधि सदा, व्यापत नाम कृपाल ॥ ५० ॥
जन मन जग त्रय वर्ण वर, शिव, विरँचि हरि तीन ।
सृजत सुपालत हरत पुनि, राम सुनाम प्रवीन ॥ ५१ ॥
सृजत अकार स्वरूप विधि, जन उर सुगुन अदोष ।
पालत मधुर रकार हरि, रूप सु करुणा कोष ॥ ५२ ॥
ग्यान रकार अकार जो, दीर्घ कर्म की खानि ।
भक्ति सु पर्म उपासना, मधुर मकारहि जानि ॥ ५३ ॥
त्रिबिध काण्ड त्रय वर्ण मय, अवराधक त्रय भाँति ।
रटि सुनाम सुख पावहीं, नशहिं कठिन दुख पाँति ॥ ५४ ॥
राम नाम कर अर्थ अति, वेद न पावहिं पार ।
प्रेमलता केहि भाँति; कह अति मति मन्द गँवार ॥ ५५ ॥
रटहिं नाम जो जीव जग, जीह पुकारि पुकारि ।
बिचरहिं महि मन मोद भरि, आशा पास निवारि ॥ ५६ ॥
ते जानेंगें नाम रस, सतगुरु चरण प्रसाद ।
राम नाम कर अर्थ उर, फुरै हृदय अहलाद ॥ ५७ ॥
राम मंत्र वर नाम मधि, जो जानत कछु भेद ।
प्रेमलता सो गुरु विना, कयहुँ कि होय अखेद ॥ ५८ ॥
एक सविधि जपि मंत्र वर, पावहिं परमानन्द ।
येन केन विधि नाम रटि, एक होहि सुखकन्द ॥ ५९ ॥

मंत्र विधान समेत बिनु, भजन करत जो कोइ ।
यथा जोग सुख नहिं मिलै, प्रेमलता श्रम होइ ॥ ६० ॥
नाम रटै लय लाय मुख, ऊँच नीच जो कोय ।
विधि विधान कालादि बिनु, प्रेमलता सुख होय ॥ ६१ ॥
षट आखर मय मंत्र वर, बीज नमः रामाय ।
सोई षट पद नाम मधि, प्रेमलतहिं दरशाय ॥ ६२ ॥
राम रूप लखि रेफ पुनि, मधुर अकार सु सीय ।
सेवक दीर्घ अकार जो, प्रेमलता कमनीय ॥ ६३ ॥
त्रय पद मधुर मकार महँ, जापक जन जिय जोय ।
प्रेमलता सतगुरु कृपा, मनन करे सुख होय ॥ ६४ ॥
प्रथम सु बिन्दुहिं भरत लखि, जग पोषण भरनीय ।
अर्ध चन्द्र श्री सत्रुहन, सम सीतल सुचि हीय ॥ ६५ ॥
ह्रश्व अकार विचारि उर, मारुत सुवन स्वरूप ।
सब लायक शुभ गुण सदन, प्रेमसुलता अनूप ॥ ६६ ॥
अन्य रीति सुनु प्रीति करि, प्रेमलता मन मूढ़ ।
राम स्वरूप सु नाम मधि, वरणहिं सन्त सु गूढ़ ॥ ६७ ॥
रेफ सुशीस ललाट दृग, तेजोमय करु ध्यान ।
ह्रश्व अकार सु वदन बद, नाशा ग्रीव सुकान ॥ ६८ ॥
दीर्घ अकार सु हृदय भुज, जापक जन अनुमानि ।
उभय लोक रक्षा करैं, प्रेमलता सुख खानि ॥ ६९ ॥
अर्ध चन्द्र लखि उदर वर, उदधि समान गँभीर ।
नाभि मनोहर अमिय ह्रद, हरत सकल जन पीर ॥ ७० ॥
कटि प्रदेश वर विन्दु जो, प्रेमलता जग मूल ।
मधुर अकार उदार पद, हरण घोर भव शूल ॥ ७१ ॥
नख शिख अङ्ग अनूपम, राम नाम मय जोय ।
प्रेमलता सतगुरु कृपा, नित नूतन सुख होय ॥ ७२ ॥
राम नाम कर अर्थ अब, और सुनहु मन लाय ।
षट सम्पति मय समुझि सुनि, प्रेमलता दुख जाय ॥ ७३ ॥
संयम रेफहिं जानि जिय, दश प्रकार तेहि माँहिं ।
प्रेमलता जेहि सेवत, सकल कुरोग नशाहिं ॥ ७४ ॥
नेम स्वरूप अकार लघु, प्रेम बढ़ावन हार ।
दश विधान एहुमा समुझि, प्रेमलता श्रुति सार ॥ ७५ ॥
संयम दश-दश नेम कर, कारण एक रकार ।
प्रेमलता जेहि सेइ जन, बिनु श्रम उतरहिं पार ॥ ७६ ॥
दीर्घ अकार विकार हर, पावन परम अनूप ।
लखहु तितिक्षा रूप जेहि, तेहि दुख सुख इक रूप ॥ ७७ ॥

ह्रश्व अकार मकार कर, तेहि जानहु उपराम ।
विषय भोगते कर्षि मन, रटवावहिं सियराम ॥ ७८ ॥
श्रद्धा मूल मकार कर, विन्दु सु इन्दु समान ।
सदा प्रकाशित विमल उर, प्रिय नभ प्रेमलतान ॥ ७९ ॥
श्रद्धा रूप सु विन्दु विनु, को जग पावै छेम ।
भजन भावना भार जेहि, प्रेमलता विनु प्रेम ॥ ८० ॥
अर्ध सु चन्द्राकार जो, शिव स्वरूप विश्वास ।
सतगुरु वैद्य सु बचन वर, प्रीति प्रतीति हुलास ॥ ८१ ॥
रेफ विवेक अकार लघु, ज्ञान सरूपहिं जानि ।
दीर्घ अकार विराग वर, प्रेमलता सुख खानि ॥ ८२ ॥
विन्दु सुभक्ति स्वरूप लखि, मङ्गल मोद प्रदानि ।
ह्रश्व अकार मकार कर, विमल विचार वखानि ॥ ८३ ॥
सहन शीलता खानि जो, अर्ध सु चन्द्राकार ।
प्रेमलता बहु गुण भरे, राम सु नाम उदार, ॥ ८४ ॥
सुन्दर रूप सुरेफ लखि, शोभा मधुर अकार ।
प्रेमलता शृंगार वर, दीर्घ अकार विचार ॥ ८५ ॥
विन्दु सु छवि पुनि नम्रता, लघु अकार मधि जोइ ।
परम प्रेम कर रूप जेहि, अर्ध चन्द्र कह सोइ ॥ ८६ ॥
षट रिपु षट रस वश भये, प्रेमलता जग जीव ।
ते न भजै षट पद विमुख, बिसरे नाम सु सीव ॥ ८७ ॥
षट उर्मिनि दुख प्रद सदा, षट पद जपे नशाँहिं ।
नाम अर्थ जाने बिना, प्रेमलता सुख नाँहिं ॥ ८८ ॥
सतगुरु कृपा कटाक्ष बिनु, दुर्लभ नाम स्वरूप ।
प्रेमलता छल कपट तजि, सेउ सु गुरु सुर भूप ॥ ८९ ॥
राम नाम के चरित गुण, अर्थ अनूप अपार ।
शेष महेश न कहि सकैं, निगमहुँ नेति पुकार ॥ ९० ॥
राम नाम युग आखर, विमल वेद के नयन ।
चन्द्र सूर्य सम विश्व हित, प्रेमलता सुख दयन ॥ ९१ ॥
लोक वेद हितकार दोउ, हेतु रहित जिय जानि ।
प्रेमलता जन जीह जपि, होहिं महा मुद खानि ॥ ९२ ॥
सुकृत सुतरु के पत्र फल, भवनिधि के दोउ कूल ।
भक्ति सुतिय कल करण के, प्रेमलता युग फूल ॥ ९३ ॥
मुनिवर हृदय सु पक्ष पटु, राम नाम युग अङ्ग ।
पर पद देत चढ़ाय जो, प्रेमलता सु निशङ्क ॥ ९४ ॥
दीर्घ रकार मकार लघु, सीताराम स्वरूप ।
प्रेमलता जपि जीह जन, पावहि मोद अनूप ॥ ९५ ॥

जापक शालि स्वरूप नित, रटत पियास पियास ।
सावन भादौं मास हुइ, हरैं सकल जग त्रास ॥ ९६ ॥
राम नाम दोउ आखर, निर्गुण सगुन सु वर्म ।
प्रेमलता सतगुरु विना, वेगि न पावहिं मर्म ॥ ९७ ॥
जापक जन सु मयूर के, राम नाम युग कान ।
राम श्याम घन रटन ध्वनि, सुनत सु प्रेमलतान ॥ ९८ ॥
राम स्वरूप सु लखन हित, राम नाम युग आँखि ।
रटन सुअँजन आँजि प्रिय, प्रेमलता जनि माखि ॥ ९९ ॥
राम नाम मय विश्व लखि, नाना अर्थ विचारि ।
प्रेमलता लय लाय रटु, मायिक भोग विसारि ॥ १०० ॥
श्री नामार्थ सु सतक यह, पढ़ै सुनै मनलाय ।
रटै नाम सतगुरु कृपा, प्रेमलता दुख जाय ॥ १०१ ॥

यह अनुपम रामनामर्थ सुनि महात्मा कृत कृत्य हो गये। जय जय कार करते हुए चरण में लोट गये। कुछ काल सत्संग कर, दिव्य यश गान करते विदा हुए।